डॉ० गंगादत्त विनोद विरचितम्

श्री भीमाकाली देव्यष्टकम्

हिमाचल सरस्वती संस्कृत कॉलेज
(हिमाचल विश्व विद्यालय से सम्बद्ध)
जांगला - रोहडू (शिमला)

आदरणीय डॉ० रमानन्त शुक्ला जी के [illegible]
सादर [illegible] 31-10-80

भीमा काली देव्यष्टकम्

(श्री परमानन्द शास्त्री तीर्थवान कृत भूमिकया तथा

श्री वृजमोहन शास्त्री

रतूड़ी रचितया हिन्दी टीकया च समलङ्कृतम्)

★ रचयिता ★

डॉ० गंगा दत्त शर्म्मा "विनोदः"

वेदाचार्य : एम० ए० (संस्कृत हिन्दीच) पी० एच० डी०

साहित्य रत्नम्, काव्य तीर्थः ।

प्राचार्य :

हिमाचल सरस्वती संस्कृत जांगला - रोहड़ू (शिमला)

हिमाचल सरस्वती संस्कृत कॉलेज

जांगला - रोहड़ू (शिमला)

प्रकाशक :

आचार्य :

हिमाचल सरस्वती संस्कृत कॉलेज

जांगला-रोहड़ू, शिमला

(तदन्तर्गत प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशितम्)

सर्वाधिकार : सुरक्षित।

प्रथम संस्करणम् — ५०० (१९९९-२०)

मूल्यम् — रुप्यक द्वयम्

मुद्रक : Rainbow Printing Press, Jammu.

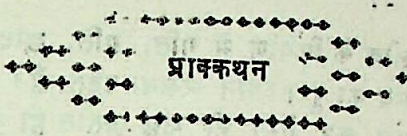

हिमाचल सरस्वती संस्कृत कॉलेज जाँगला रोहड़ू (शिमला) के प्राचार्य के रूप में कार्य-भार संभालने के पश्चात् कुछ मास तो प्रस्तुत संस्था की नयी उपलब्धियां संजोने में ही मुझे अत्याधिक व्यस्त रहना पड़ा। कॉलेज भवन की कुछ दूरी पर चमत्कारिणी भगवती भीमा काली के चमकते हुए मन्दिर के प्रति दिन दर्शन हो जाते थे तथा नैवेद्य चढ़ाने वाले श्रद्धालु भक्तों का जमघट भी देखने को मिलता। कालेज प्रशासन में व्यस्त हुए मुझे कभी विचार नहीं हुआ कि जाकर स्वयं भी दर्शन करूँ और मस्तक झुकाऊँ। एक दिन अकस्मात् किसी सज्जन ने उक्त भगवती के प्रत्यक्ष चमत्कारों की कुछ बातें सुनाईं। घटनाएँ इतनी प्रत्यक्ष और आंखों देखी प्रतीत हुईं कि सहसा इन अलौकिकताओं पर विश्वास होने लगा। ऐसी चमत्कारिणी भगवती पर किसी ने कोई अष्टक नहीं रचा, यह बात भी भक्त ने कही, जो मेरे हृदय पटल पर जम गई। संस्कृत कॉलेज के साथ रहते हुए भी इस आस्थान पर स्तुति पाठ संस्कृत में न लिखा जाय, यह एक दुःख और आश्चर्य ही हो सकता है। इस प्रकार के विचार मेरे मन में उठने लगे और परिणाम स्वरूप लेखनी में भी स्पन्दन भर गया। तत्काल कवित्व धारा ऐसी उमड़ी कि एक ही समय और एक ही स्थान पर बैठे-२ यथा शीघ्र अष्टक तैयार हो गया। समय पर इतना आशु कवि बन सकता हूँ, प्रसंग मुझे कभी विश्वास नहीं था।

फिर संस्कृत श्लोक के निर्माण में गति, यति, छन्द, भाव और व्याकरण इन सब का पूरा ध्यान रखना पड़ता है। उस दिन की यह घटना सोच कर ऐसा ही कुछ प्रतीत हो रहा है कि इस रचना में भगवती भीमा काली की सत्ता भी कार्य कर रही थी। अष्टक निर्माण के अनन्तर कॉलेज के संस्थापक श्री परमानन्द जी शास्त्री से भूमिका लिखने का अनुरोध किया गया। वे इस आस्थान और प्रदेश के ऐतिहासिक सन्दर्भ में बहुत कुछ जानते हैं इसी कारण उनकी भूमिका अधिक तथ्य पूर्ण तथा प्राचीन इतिहास एवञ्च पुरानी लोक जन-श्रुतियों के आधार पर अधिक सूचनात्मक और रोचक बन पड़ी है। मैं शास्त्री जी का अधिक आभारी हूँ।

रचना में यदि कुछ त्रुटियां रह गई हों तो मुझे आशा है कि विद्वान पाठक क्षमा करेंगे।

गंगा दत्त

★ ★ ★

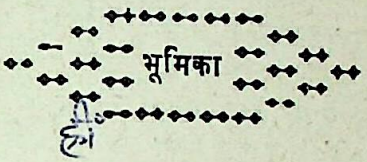

ॐ ऐं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

हिमाचल सरस्वती संस्कृत कालेज के प्राचार्य डॉ० गंगा दत्त शास्त्री "विनोद" जी जम्मू के निवासी हैं, जिन्हे यहां पर आये केवल एक बर्ष ही पूरा हुआ है ं इतने थोड़े से समय में इन्होने यहां पर अन्य भी कुछ महत्वपूर्ण रचनाएं लिख दी' हैं। और इस से पहले भी अनेक ग्रन्थ इनके प्रकाशित हो चुके हैं। ये लेखक और कवि के रुप में क़ाफी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

इनकी प्रत्येक रचना विद्वता और अनुभव का परिचय देती है इनके द्वारा लिखा गया —

भीमा काली देव्यषृक तो इनकी विद्वता और अनुभव की अपेक्षा स्थान जाङ्गला वासा के इस मंदिर में होने वाले चमत्कार पूर्ण घटना तथा दैनिक कृपा से अधिक सम्बन्ध रखता है ।

यह घटना दिव्य प्रेरणा के साथ -२ अतीत के कुछ ऐतिहासिक तथ्यों से भी सम्बन्ध रखती है। जिसकी पृष्ट भूमि उल्लेखनीय रही है।

१. राणा का काल

कहा जाता है कि एक छोटा सा राजगढ़ का राणा यहा रहता था और शासक था, जिसने यहां एक सुन्दर किले का निर्माण करवाया था। चार वीघा की भूमि में 20 फुट ऊँची और आठ फुट चौड़ी चार दीवारियों से घिरे इस किले के चारों कोने पर चार मिनारें ऊंचो-२ बनाई गई थी, किले के सामने की ओर एक मुख्य द्वार था और एक गुप्त मार्ग नदी की ओर एक बना था किले के पत्थरों की चिनाई तराश कर की गई थी उक्त राणा ने एक बार रामपुर बुशहर मे राजा को आमन्त्रित कर रखा था। एक रात राजा अतिथि गृह में आराम से सो रहा था, उधर राणा ने उस की रियासत पर अधिकार कर ने की भावना से उसे समाप्त करने की ठान ली थी। राणा के कुल पुरोहित को जब इस बात का पता चला तो उसने राजा को भाग निकलने को कहा और सारी बात सुनने के बाद राजा और राणा के कुल पुरोहित के बीच गुप्त समझौता हो गया कि राजा पुरोहित के कपड़े पहन कर पूजा के बहाने पानी लाने गुप्त मार्ग से बाहर चला जायेगा और पुरोहित राज वस्त्र में राजशय्या में सो जायेगा। राजा पुरोहित की सन्तति को अपनी रियासत के आस पास के क्षेत्रों की पुरोहिताई का अधिकार दे देगा। फलत : राजा के स्थान पर पुरोहित की हत्या हो गई राजा भाग निकला। कहते हैं कि पुरोहित नँडला ग्राम के कन्ताण वंश का था जिसे राजा ने अपनी काफी बड़े क्षेत्र का पुरोहित का अधिकार दे दिया था।

२. किले का पतन और बुशहर राजा का अधिकार

बुशहर राजा ने भमुराय गढ़ की सामने की पहाड़ी पर से

भमूराव राणा के सहयोगी में अपने यन्त्रिक व तान्त्रिकों की सहायता से पेड़ों की चोटियों की खिचाव और उछाल से एक बड़ा पत्थर जिसे ढींम का पत्थर कहा जाता है किले पर निशाना बांध कर मारा, जिस से किले की नदी की ओर की दिवार क्षति ग्रस्त तथा तीन मिनारें नष्ट हो गड़। ढींम का व पत्थर अभी भी मिट्टी के नीचे विद्यमान है। राणा का सारा परिवार नष्ट हो गया या राज सैना द्वारा नष्ट करा दिया गया। हां! कहा जाता है कि राणा का एक वशज राणा से पहले ही पृथक रहता था उसने विशाल सम्पनि लेकर मसली ग्राम में एक सुन्दर ऊँचा मकान बना कर ब्राह्मणत्व स्वीकार कर लिया था, और ब्राह्मण वेश में ही विवाह कर लिया था उसे राजा के साथ राणा का वैर त्राव अच्छा नहीं लग रहा था इसी लिए वह उससे पृथक हो चुका था।

३ भीमा काली मन्दिर और भीमा बेत्री की स्थापना :-

किले और राणा की सारी जागीर को राजा ने अपने अधिकार में ले लिया। किले के भीतर अपनी अधिष्ठात्री देवी सराहन भीमा काली की स्थापना यहां पर भी कर दी गई और सारी जागीर भीमा काली वासे के नाम कर दी गई।

४ भीमा काली वासा पर कृषकों का अधिकार और किले के अवषेशों का पतन :-

स्वन्त्रता प्राप्ति के बाद जैसे ही रामपुर बुशहर रियासत के

राज्य को समाप्त कर भारतीय गणराज्य में मिला लिया या इसके तुरन्त बाद भीमा काली वासा की जागीर पर काश्तकारों का स्वामित्व हो गया। किले के भीतरी भाग में जहां वासा नाम का भवन बना था वहां कुछ वर्षों में तत्कालीन लोयर मिडिल स्कूल जाँङ्गला की कक्षाएँ एवं छात्रावास चल रहा था पर किले की दीवारों के पत्थरों से विद्यालय भवन आदि अन्य अनेक सामाजिक एवं निजी इमारतें तो बननी प्रारम्भ हो गई पर इस ऐतिहासिक थाती की रक्षा की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया सन 1950 तक एक मीनार और किले की तीन तरफ की दिवारें सुरक्षित पड़ी थी। एक इसके दायित्व का भार कोई भी नहीं ले रहा था। अतः धीरे २ बाहरी दिवारें तथा भीतरी सोर वासे आदि के पत्थर भी गिर कर और गिरा कर समाप्त होते गये। फलतः किले कि स्थिति इति शेष रह गई जो अतीत कला की किश्चित याद दिला रही है।

किले के अन्दर प्रारम्भ से एक छोटा सा मंदिर बना हुआ है, जिसमें एक शिव और पार्वती के रूप की संयुक्त वागर्थप मूर्ति है।

५ यह स्थान पुनिनर्माण की ओर

क्षेत्र के सूझ बूझ वाले कुछ लोगों ने कुछ वर्षों के बाद यह अनुभव करना प्रारम्भ कर दिया कि इस किले के नाममात्र की बची बुनियादों के अवशेष की रक्षा की जाये और मंदिर का पुनः निर्माण किया जाये।

श्रृद्धालु और सामाजिक लोगो ने तब से अब तक जो इस ओर कार्य किया है इसके परिणाम स्वरुप लोगों ने इस ओर

कार्य किया है इसके परिणाम स्वरूप लोगों ने इस ओर ध्यान देना शुरू कर दिया से। पूजा-पाठ की व्यवस्था की गई है। मंदिर निर्वाण के लिए दान राशि भी एकत्रित की गई। हिमाचल से लेकर विहार तक के श्रृद्धालु भक्तों ने इस के निर्माण के लिए सहयोग दिया है, पत्थरों की तराशी और मंदिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ है।

६ इसके पीछे देवी चमत्कार :-

१) इस मध्य बहुत सी ऐसी घटनाएं घटी, जिन का वर्णन इस छोटी सी पुस्तिका में करना कठिन है। मैं समझता हूँ कि देवी की अपार कृपा से ही यह सब कुछ यहां होने लगा है मंदिर निर्माण की योजना की प्रेरणा अपने आप में एक दैविक घटना है।

२) यहां से मूर्ति का बार-२ जाना और वापिस आना यह एक दैविक घटना है।

३) मंदिर का नाम जय दुर्गे मंदिर न रख कर नाम बदलने के लिये किसी अज्ञात व्यक्ति से कहलवाना भी एक दैविक घटना है।

४) संस्कृत कालेज को इस दूर दराज के क्षेत्र में यहां पर खोलने की प्रेरणा भी एक दैविक घटना है।

५) दूसरे अनेक स्थानों में कालेज भवन के निर्माण के उच्चस्तर पर प्रयत्न करने पर भी भवन को यहीं बनने की परिस्थितियों के पीछे भी एक दैविक घटना है।

६) जिन कुछ अहँ वाले व्यक्तियों ने अभिमान से देवी को तिरस्कृत करने की चुनौती दी और देखते-२ उनकी इच्छाओं का पतन भी एक दैविक घटना है।

७) इसी प्रकार आदरणीय डॉ० विनोद जी द्वारा यह भीमा काली देव्याष्टक स्तोत्र भी लिखने की उनकी पूर्व रात्रि की एक अद्भुत सत्य दैविक घटना है।

७. मंदिर में मूर्ति का रहस्य और नाम :-

यह मूर्ति भगवती महामाया के किस रूप की ओर सकेंत करती है, उसका विवेचन मैं अपने विचार से इस प्रकार करता हूँ कि यह मूर्ति भीमा काली या भीमा देवा की मूर्ति ही है। क्यों कि देवी को समष्टि और व्यष्टि रूप से दो प्रकार की उपासना होती है।

१) समष्टि उपासना में रूद्र और गौरी, ब्रह्मा और सरस्वती, विष्णु और लक्ष्मी के प्रकृति पुरुष के रूप में उपास्य तीन रूप है। रूद्र और गौरी युगल में रूद्र भी महाकाली से प्रादुर्भूत माना गया है। वैकृतिक रहस्यानुसार भी महाकाली के पृष्ट भाग में रूद्र और गौरी उपासना का वर्णन है। प्राकृतिक और प्राधानिक रहस्यों में देवी की समस्त विकृतियों (अवतारों) की प्रधान प्रकृति को महालक्ष्मी स्वरूप में प्रतिपादित है।

परन्तु चतुर्भुजा महालक्ष्मी ने क्रमशः तमोगुण, सत्वगुण रूप उपाधि के द्वारा महाकाली और महा-सरस्वती के ये दो रूप प्रकट किये हैं। परन्तु ये रूप

सप्तशती के प्रथम चरित्र और उत्तर चरित्र में महाकाली और महासरस्वती के दस भुजा और अष्ट भुजा से पृथक है। फिर भी इन तीनों देवियों ने एकत्र जोड़ा उत्पन्न किया। (i) महाकाली से शंकर और सरस्वती (ii) महालक्ष्मी से ब्रह्मा और लक्ष्मी (iii) महासरस्वती से विष्णु और गौरी का प्रादुर्भाव हुआ। इनमें लक्ष्मी विष्णु को, गौरी शंकर को और सरस्वती, ब्रह्मा को प्राप्त हुई। इस प्रकार से शंकर गौरी से सम्पृक्त चतुर्भुज महाकाली मातुलिङ्ग, गदा, खेट और पानपात्र धारण करती है तथा मस्तक पर नाग, लिङ्ग और योनि धारण किये रहती हैं।

भुवनेश्वरी संहिता के अनुसार मातुलिङ्ग कर्म राशि का, गदा क्रिया शक्ति का खेट ज्ञान शक्ति का, और पान पात्र तुरीय वृत्ति (सच्चिदानन्द में लीन-स्थिति) का सूचक है। इस प्रकार काल से नाग का योनि से प्रकृति का लिङ्ग से पुरुष का ग्रहण होता है। तात्पर्य यह है कि प्रकृति, पुरुष और काल तीनों का अधिष्ठान परमेश्वरी महालक्ष्मी ही बीजरूपा है। इसी को तमोगुणमयी महाकाली भगवान विष्णु की योग निद्रा कहा गया है। इसी को सत्व गुणमयी :-

गौरी देहात्समुद् भूता या सत्वैक गुणाश्रया।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी।

अर्थात सत्व गुण से युक्त, गौरी देह से समुद्भूत, शुम्भ दैत्य का संहार करने वाली यही सरस्वती हैं। यही महादेवी मूर्ति रहस्य में वर्णित नन्दा, रक्तदन्तिका,

शाकम्भरी, दुर्गा, भीमा और भ्रामरी में से भीमा रूपा है। क्योंकि सप्तशति में यह तथ्य महामाया स्वयं स्पष्ट करती है कि :—

पुनश्चाहं तदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले। ११/५०
भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। ११/५२

जब मैं भीम रूप धारण करके मुनियों की रक्षा के लिये हिमालय पर रहने वाले राक्षसों का भक्षण करूंगी उस समय सब मुनि भक्ति से नतमस्तक हो कर मेरी स्तुति करेंगे तब मेरा नाम "भीमा देवी" के रूप में विख्यात होगा। ।५२।

यह समष्टि रूप महाकाली रुद्र गौरी संहिता हिमाचल के इस देव स्थान में भी अपनी आभा निम्न २ लोक के अनुसार प्रकट करती सी प्रतीत है

भीमापि नीलवर्णा सा दष्ट्रा दशन भासुरा।
विशाल लोचना नारी वृत पीन पयोधरा॥
चन्द्रहासं च डमरूं शिरः पात्रं च विभ्रती।
एक वीरा काल रात्रि सैवोक्ता कामदास्तुता।
(मूर्ति रहस्य)

अतः डा० साहब का लिखा देव्यष्टक भी जिस दैनिक प्रेरणा के आधार पर लिखा गया है उससे ऐसा लग रहा है कि जिस प्रकार मंदिरोत्थान और इसकी महिमा उत्तरोत्तर फैलती जा रही है। यह अष्टक भी भक्तों की निरत रति का प्रेरक और महा देवी की

प्रसन्नता का सूचक हो गया है। इसके सभी चमत्कारों और अद्भुत घटनाओं का उल्लेख करने के लिए तो मेरे लिए

असित गिरि समं स्यात्कज्जलं सिन्धु पात्रे
सुर तरू वरू शाखा लेखनी पत्रभुर्वी

की घटना चरितार्थ होगी। अतः संक्षेप में हमें तो यही सोचना चाहिए की यही भीमा देवी ऐंकार से समष्टि रूप की ह्रींकार से प्रति पालिका रूप की क्लींकार से बीज रूप (काम रूप) की चामुण्डा से चण्ड घाती रूप की यैंकार से वरदात्री रूप की और विच्चे से अभय दान का बोध करती है। और

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नि वां वीं वूं वाग धीश्वरी
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवी शां शीं शूं में शुभं कुरू॥

यही विचार करते हुए वाग् और अर्थ के रूप में सम्पृक्त रूद्र और गौरी (प्राकृति पुरूष) की द्योतक सत्वगुणमयी यह सरस्वती, भीमाकालीअष्टक के लेखक की मनोकामना पूर्ण करें तथा इनके शासन में चलने वाले इस सरस्वती महाविद्यालय की सत्वमयी कीर्ति और लाभ दूर-२ तक होता रहे। यह भीमादेवी या भीमाकाली हम सब को कल्याण पथ पर जाने की प्रेरणा देती रहे। चाहें कुछ भी लिखें पर सार रूप में हम यही कह सकते हैं। कि

सर्वरूपमयी देवी सर्वदेवीमयं जगत,
अतोऽहंविश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीं ॥

विनीत

परमानन्द शास्त्री "तीर्थवान"
संस्थापक संस्कृत संस्कृति सेवा संघ
जांगला रोहडू, शिमला

★ ★ ★

टीकाकार के दो शब्द

हिन्दी, संस्कृत साहित्य जगत् के ख्याति प्राप्त विद्वान लेखक तथा बहुभाषाविद् कालेज प्रधानाचार्य डॉ० गंगा दत्त शास्त्री "विनोद" जी द्वारा विरचित भीमाकालीदेव्यष्टक पर भाषा लिखने का मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। साथ ही मेरी प्रार्थना पर कालेज सस्थापक श्री परमानन्द शास्त्री "तीर्थवान्" जी ने जो रहस्यमयी ऐतिहासिक भूमिका लिखी है वह अपने आप में एक खोज पूर्ण निवन्ध है, जिसे पढ़ लेने से प्रस्तुत अष्टक के रहस्य ज्ञान के साथ भगवती भीमा काली देवी की चमत्कार पूर्ण ऐतिहासिक पृष्ट भूमि भी पाठकों को मिल पाए गो।

मुझे आशा है कि सभी श्रृद्धालुजन इस अष्टक से अधिक से अधिक लाभ उठाये गे। यह अष्टक कर्म भक्ति और ज्ञान की त्रिविध मन्डाकिनी वहाने वाला भक्तों के लिये वाञ्छाकल्प तरु है।

विद्वच्चरण चञ्चरीक
वृजमोहन रतूड़ी "मोहन"

१६ मार्गशीर्ष
शुक्ला भयोदशी

डॉ० गंगा दत्त विनोद विरचितम् भीमा काली देव्यष्टकम्

हिमाचले नूतन सस्य शोभिते
कृताधिवासां मतुलप्रभावतीम्
निजानुरक्तार्ति हरां दयार्णवाम्
नमामि भीमां नव नीरद प्रभाम् ।। १ ।।

★ ★ ★ ★ ★

वन्दो गुरू पर कमल रज, भारती ज्ञान प्रकाश ।
कृपा कटाक्ष के माल से, होई अविद्यानाश ।। १ ।।

भव नाशनी सुखदायिनी भीमा नाम सुनाम ।
सफल करे मन मनोरथ पूर्ण होय सब काम ।। २ ।।

अष्टक श्री गंगा रत्त कृत भाषा लिखू व्याख्यान ।
कृपा यदि भीमा करे सकल कार्य आसान ।। ३ ।।

मति नन्द यह सुत तेरा पूजा करूं न विधान ।
आधि व्याधि युत हूँ पड़ा तू ही एक निदान ।। ४ ।।

अर्थ :—

नये सस्य से हरे भरे हिमाचल में अधिष्ठित अधिक प्रभा युक्त, अपने भक्तों के दैहिक, दैविक भौतिक तापों को नष्ट करने वाली, दया की समुद्र एवं नये नीले कमल की शोभा के सदृश भगवती भीमा देवी को मैं नमस्कार करता हुँ ।। १ ।।

स्तुतिर्हि यस्याः प्रतिवेश्म गीयते,
प्रपूज्यते या नर नारिभिस्सदा।
सुरम्य - ग्रामे रवत्तु जाङ्गत्तामिधे।
विभाति माता निज मन्दिरे वरे॥ २॥

★ ★ ★

अर्थ :-

जिसके स्तुति गीत घर-२ में हमेशा बड़े प्रेम से गाये जाते है, जो सर्वदा नर नारियों द्वारा पूजित हैं, ऐसी यह जगदधिष्ठात्री माता हिमाचल स्थित जाँगला नामक सुरम्थ ग्राम में अपने दिव्य मन्दिर में सुशोभित है। या

★ ★ ★

मनोरथानां परिपूरणे सदा
गता प्रसिद्धि सकले हिमाचले
बिभर्ति शक्ति वरदान दायिनीम्
सुविग्रहस्यापि कुकर्म कारिणाम् ॥ ३ ॥

★ ★ ★

अर्थ :-

श्रद्धावान भक्तों के मनोरथों को सदा पूर्ण करने में जो सम्पूर्ण सारे हिमाचल में प्रसिद्ध है। जो अपने भक्तों को मनोवाञ्छित वरदान देने में समर्थ तथा कुकर्म-कर्ता व्यक्तियों को दण्डित करने की शक्ति को धारण किये हुए है।

★ ★ ★

समाह्वयन्तीव रवगैः सुकूजितै,
समग्र देशागत प्रार्थना परा—।
स्तरानेकान्ननु दर्शनोत्सुकान्,
विभावयन्ती सकृत्तान् सुतानिवै ॥ ४ ॥

★ ★ ★

अर्थ :-

भीमा काली माता अपनी आराधना में लगे हुए समस्त देशों से आये हुए दर्शन करने की परम अभिलाषा वाले भक्तों को मानो पक्षियों के कलरव के द्वारा बड़े प्यार से बुलाती है और पुत्र के समान प्यार करती है।

★ ★ ★

त्वदीयमेकं हि दया कटाक्षकम्
समस्त सन्ताप निवारणे क्षमम्
स मन्द भाग्यः खलु योऽवबुध्यते
न तावकीनां महिमां महीयसीम् ।। ५ ।।

अर्थ :-

हे मां! तेरी एक ही अपार कृपा दृष्टि के हो जाने से मनुष्य के सम्पूर्ण दुःख नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार जो व्यक्ति तेरी इस महिमा को नहीं जानता वह वास्तव में मन्दभाग्य है। ५।।

कृपा कटाक्षेण - त्वया कृतार्थका:

कृता अनेका जगदम्बिके? भवे

सुतस्त्वदीयोऽहमतीव निर्बलः

व्यथाकुलस्ते शरणं प्रयामिवै ।। ६ ।।

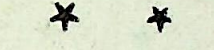

अर्थ :-

हे जगदम्बिके! तेरी एक ही कण मात्र कृपा कटाक्ष से संसार के अनेकों भक्त कृतकृत्य हो गये हैं। मैं तेरा अतीव निर्बल पुत्र भव बन्धनों से व्याकुल होकर तेरी शरण में आया हूँ ६ ।।

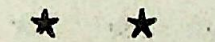

दया त्वदीया यदि स्यात् सुदुर्लभा
नरः समारोहति भाग्य कोटिकाम्।
सदाम्ब! प्रेमाम्बु - प्रवर्षिणी सताम्,
त्वमेवमेकं शरणं भवार्णवे ॥ ७ ॥

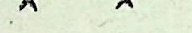

अर्थ :-

तेरी कृपा तो बड़ी दुर्लभ है लेकिन यदि किसी व्यक्ति पर हो गयी तो वह व्यक्ति अपने भाग्य की उच्चकोटी को प्राप्त कर लेता है।

हे अम्ब! तू सहृदय श्रृद्धावान् जनों के ऊपर प्रेममय जल की सुखमय वर्षा करने वाली है। संसार रूपी समुद्र में तू ही एक शरण है।

न ज्ञायते तेऽर्चन - चातुरी मया
कृतं न किञ्चित्त्वदुपासनं तथा ।
क्षमस्व मां मातर ते कृतागसम्,
विवेक हीनञ्च कुपुत्रतां गतम् ॥ ८ ॥
इति श्री गंगादत्त शास्त्री विनोद कृतँ
भीमा काली देव्यष्टकं समाप्तम्

★ ★ ★

अर्थ :-

मैं तेरी पूजा विधान की चतुरता को नहीं जानता हूँ और न मैंने कभी तेरी उपासना ही की है। फिर भी हे माँ! तेरा अपराधी विवेकहीन कुपुत्र तेरी शरण में आया हूँ क्षमा करो।

★ ★ ★

वृज मोहन रतूड़ी कृत हिन्दी टीका
समाप्त

★ ★ ★

हरिः ॐ पूर्णमिद पूर्णमदः पूर्णा पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
ॐ शान्ति ३ (आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक
शान्ति हो)

★ ★ ★

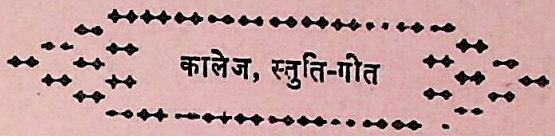

हरी भरी है सदा सुहानी यह देव भाषा की राजधानी
खड़े है चारो पहाड़ ऊचे, स्वय भी ऊची जो हो रही है,
नदी की निर्मल तरंग माला, इसी के पैरो को धो रही है,
तपस्थली भी वन स्थली भी, यह ज्ञान विद्या की राजधानी—
यह देव भाषा की राजधानी

यह जांगल में बसी हुई है, सरस्वती की निवास भूमि,
यह सस्कृतज्ञों की शास्त्रशाला, यह छात्रवृन्दो को पाठ माला
चरित्र निर्माण कर रही है, चरित्र शोभा की राजधानी
... यह देव भाषा की राजधानी

उठे है संगीत स्वर सुहाने यहां से भारत की संस्कृति के
अनेक शास्त्रो बने यहा से, अनेक उज्जवल हुए यहीं से
खड़ी सुशिक्षा का रूप लेकर यह सर्व शिक्षा की राजधानी
यह देव भाषा की राजधानी

यह परम शास्त्री[1] की देश भक्ति, यह उनकी रचना यह उन की शक्ति
इसी की सेवा इसी की भक्ति इसी में उनकी सदानुशक्ति
बसी हिमालय के रम्य तल पर, यह ज्ञान गरिमा की राजधानी
हरी भरी है सदा सुहानी यह देव भाषा का राजधानी

—"विनोद"

१—श्री परमानन्द शास्त्री (कालेज संस्थापक)

कालेज के वर्तमान प्रधानाचार्य

डॉ० गंगा दत्त शास्त्री "विनोद" की रचनाएँ

१	मति मन्थन (विभिन्न विषयों पर लिखे निबन्ध	२०/-
२.	उल्लोल (हिन्दी कविताएँ)	३/-
३.	शोध-शिक्षा (शोध प्रक्रिया की कला)	८/-
४	चण्डी दास ग्रन्थावली (संस्कृत)	३०/-
५.	रघुनाथ गुणोदय — एक समीक्षा	२०/-
६	रघुनाथ गुणोदय (संस्कृत)	२७/-
७.	शनि दर्शन (संस्कृत)	२/-
८.	कश्मीर पथ प्रदर्शक	४/-
९.	अनुराग-विराग उपन्यास	यन्त्रस्थ 15/-

कालेज प्रकाशन से प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ

१	महा पुरुषों से साथ	डा० गगा दत्त शास्त्री 'विनोद"
२.	श्री हिम नाटय गीता (श्रीभद्भगवत गीता का पहाड़ी भाषा में सछन्द रूपान्तर)	परमानन्द शास्त्री "तीर्थवान"
३.	देवात्माओं के देश में (हिमाचल की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परम्पराओं एवं दैवी सत्य घटनाओ पर शोध ग्रन्थ)	परमानन्द शास्त्री "तीर्थवान्"
४.	लोक गीतापली (पहाड़ी गीतों का संग्रह)	परमानन्द शास्त्री "तीर्थवान"
५.	वरदान	परमानन्द शास्त्री "तीर्थवान्"
६.	कर्मकाण्ड कुञ्जिका	वृजमोहन रतूड़ी "मोहन"